Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 9 | ISSUE : 3 | SPECIAL ISSUE MARCH-2023

कोविड-19 : सामाजिक आर्थिक बदलाव व चुनौतियाँ

सुमन पूनीया

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग गोविन्द गुरू जनजातीय विश्वविद्यालय बांसवाड़ा

ABSTRACT:

ऐतिहासिक विवरणों के माध्यम से ज्ञात होता है कि मानव सभ्यताओं ने मानव जाति व मानव संस्कृति के इतिहास में अनेक अप्रत्याशित विभिषिकाओं का सामना किया है। वैश्विक स्तर पर अनेक बार आपदायें आई जो मानव जाति के नियंत्रण से बाहर थी पर मानव ने अपने विवेक, साहस तथा धैर्य से उन आपदाओं पर विजय प्राप्त की एवं अपने विकास रूपी चक्र को सदा गतिशील रखा। समय के साथ अपने सम्मुख उत्पन्न संकटों को चीरते हुए आगे बढ़ने का साहस मानव में मानव सभ्यता के मूल मंत्र "संकल्प से सिद्धि" के भाव के साथ आता है। यह मूल मंत्र संदेश देता है कि मानव द्वारा जो लक्ष्य निर्धारित किया जाता उसकी पूर्ति सम्भव है।

भारत में वर्तमान की भाँति पूर्व में 1918 की स्पैनिश फ्लू नाम की महामारी का प्रभाव हमारे परिवेश में पड़ा। एक अनुमान के अनुसार स्पैनिश महामारी से देश में 1.8 करोड़ लोगों की मृत्यु हुई थी जो उस समय की आबादी का 6 प्रतिशत था। कोविड-19 वैश्विक महामारी की तुलना वॉल स्ट्रीट जर्नल के एक लेख में स्पैनिश फ्लू से की गई है तथा यह भी कहा गया है कि पूर्व की भाँति मृत्यु दर उतनी नहीं होगी क्योंकि संसाधनों की उपलब्धता के कारण संसार भर में अनेक बदलाव हुए हैं।

कोविड-19 महामारी और इससे संबंधित लॉकडाउन का अर्थव्यवस्था पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ा जिसके कारण सबसे कमजोर वर्गों को आजीविका, कमाई का नुकसान हुआ और उन्हें खाद्य असुरक्षा भी झेलनी पड़ी। यद्यपि इस महामारी का लोगों के आर्थिक कल्याण पर पड़ा प्रभाव अधिक स्पष्ट रूप से दिखता है, उनके मानसिक स्वास्थ्य पर हुआ प्रभाव उतना ही प्रतिकूल है लेकिन वह साफ दिखता नहीं है।

KEYWORDS:

कोविड-19, आपदायें, महामारी, लॉकडाउन, अर्थव्यवस्था, आर्थिक

प्रस्तावना

अतीत में झांके तो 31 दिसंबर, 2019 से ठीक एक दिन पहले चीन ने वुहान प्रांत में कोरोनो वायरस संक्रमण का पहला मामला दर्ज किया था। इसका कोई औपचारिक नाम नहीं था और ज्यादातर लोगों ने इसे नोवेल कोरोना वायरस या 2019-एनओसीवी नाम दिया था। चीन की अति संरक्षित शासन के बीच से छिट-पुट मामले ही रिसकर बाहर आ पाए थे। 30 जनवरी, 2020 को भारत ने इस बीमारी का पहला मामला सामने आया। 11 फरवरी, 2020 को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे नोवेल कोरोना वायरस से होने वाली बीमारी का औपचारिक नाम दिया, जो कुछ ही हफ्ते में तेजी से फैलने वाली महामारी बन गई। हमने पहली बार इसका डरावना नाम सुना : कोविड-19– जिसमें 'को'का मतलब कोरोना, 'वि'का मतलब वायरस और 'डी'का आशय बीमारी के लिए व '19' का प्रयोग 2019 के लिए है।

कोविड-19 महामारी ने दुनियाभर के लोगों के स्वास्थ्य, आजीविका और सामाजिक जीवन को प्रभावित किया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा महामारी घोषित किए जाने के बाद अनेक देशों ने परिस्थिति अनुसार अलग-अलग समय में लॉकडाउन घोषित किया। भारत सरकार ने 23 मार्च 2020 से लॉकडाउन की घोषणा की जिसे कई चरणों में विस्तारित करते हुए 31 मई 2020 तक बढ़ाया गया।परिणामस्वरूप, सार्वजनिक स्थानों को बंद कर दिया गया, लोगों की आवा-जाही को प्रतिबंधित करते हुए सामाजिक दूरी का पालन करने को कहा गया। अचानक घोषित लॉकडाउन से देशभर में लोग बिना किसी पूर्व सूचना एवं तैयारी के जो जहां थे वे वही कैद हो गए। कोविड महामारी के दौरान लगाए गए लॉकडाउन ने समाज के कमजोर और हाशिए के वर्गों के सामने आने वाली चुनौतियों को और ज्यादा बढ़ाया

सामाजिक आर्थिक बदलाव व चुनौतियाँ

वैश्विक महामारी कोविड-19 ने पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था को बुरे दौर में पहुंचा दिया है, आमजन के साथ-साथ देशों की और सरकारों की आर्थिक स्थिति पहले की तरह सुदृढ़ नहीं रह गयी है। अर्थव्यवस्था उत्पादन, वितरण एवं खपत की एक सामाजिक व्यवस्था है। भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व में सातवें स्थान पर है, जनसंख्या में इसका दूसरा स्थान है और केवल 2.4 फीसद क्षेत्रफल के साथ भारत विश्व की जनसंख्या के 17.5 फीसद भाग को शरण प्रदान करता है यानी विश्व की कूल जनसंख्या में 17.5 फीसद भारतीय नागरिक हैं।

1991 से भारत में बहुत तेज आर्थिक प्रगति हुई है जब से उदारीकरण और आर्थिक सुधार की नीति लागू की गयी है और भारत विश्व की एक आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभरकर आया है। सुधारों से पूर्व मुख्य रूप से भारतीय उद्योगों और व्यापार पर सरकारी नियंत्रण का बोलबाला था और सुधार लायू करने से पूर्व इसका जोरदार विरोध भी हुआ परंतु आर्थिक सुधारों के अच्छे परिणाम सामने आने से विरोध काफी हद तक कम हुआ है। हालांकि मूलभूत ढाँचे में तेज प्रगति न होने से एक बड़ा तबका अब भी नाखुश है और एक बड़ा हिस्सा इन सुधारों से अभी भी लाभान्वित नहीं हो पाया है।

कोरोना महामारी ने भारत की अर्थव्यवस्था पर गहरा निशान छोड़ दिया है। कोरोना की पहली लहर से डगमगाई भारतीय अर्थव्यवस्था अभी पटरी पर लौटी भी नहीं थी कि कोरोना की दूसरी लहर ने इसे बुरी तरह प्रभावित कर दिया। जिससे भारत के आर्थिक विकास की उम्मीदों पर पानी फिरने लगा है क्योंकि कोरोना काल में करोड़ों लोगों के नौकरी खोने और बैंक कर्ज में डिफाल्टरों की संख्या बढ़ने से कोविड-19 महामारी के वित्तीय झटके से उबरने में अधिक रुकावटें आ रही हैं।

अर्थशास्त्री अपने अनुमानों को डाटा की एक श्रेणी के रूप में डाउनग्रेड कर रहे हैं। अर्थशास्त्रियों का कहना है कि चेक बाउंस होने की दर में बढ़ोतरी से लेकर गिरवी रखे गए सोने के आभूषणों की बिक्री कोरोना बीमारी की विनाशकारी दूसरी लहर से हुए आर्थिक क्षति की सीमा को दर्शाता है।

कुछ पर्यवेक्षकों को इस साल भारत में फैली वायरस महामारी से मनोवैज्ञानिक आघात का भी डर है, उनका अनुमान है कि इससे हजारों लोगों की मौत हो जाएगी, और उपभोक्ता खर्च करने के लिए अनिच्छुक हो जाएगा।

वहीं भारत की सरकार इस पूर्वानुमान के साथ आगे बढ़ रही है एक अप्रैल से शुरू हुए वित्तीय वर्ष में अर्थव्यवस्था 10.5 फीसदी बढ़ेगी, लेकिन मंगलवार को देश के सबसे बड़े ऋणदाता भारतीय स्टेट बैंक ने अपने विकास के अनुमान को 10.4 प्रतिशत से घटाकर 7.9 फीसदी कर दिया। साथ ही बार्कलेज और यूबीएस जैसे कई अंतरराष्ट्रीय बैंकों ने भी अपने पूर्वानुमानों में कटौती की है।

2020-21 में 7.3 फीसदी संकुचन के बाद भारत द्वारा अब तक दर्ज की गई सबसे तेज रिकवरी-अपेक्षाकृत मौन वसूली भारत को अमेरिका और चीन जैसे देशों के साथ बाधाओं की श्रेणी में डालती है, जो महामारी से उभरने के साथ ही तेजी से बदलाव देख रहे हैं और गहरी क्षति का सुझाव देते हैं, जिन्होंने कोरोना संकट की चपेट में आने से पहले लगभग 2.9 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था का जिक्र किया था। भारत जैसी तेजी से विकासशील अर्थव्यवस्था पर उप-सममूल्य वृद्धि का प्रभाव महत्वपूर्ण हो सकता है।

एसबीआई के मुख्य अर्थशास्त्री सौम्य कांति घोष ने अपने पूर्वानुमान को कम करने के बाद कहा कि 'देश में जीडीपी की वृद्धि दर 10 फीसदी से कम होगी, मैं आपदा शब्द का उपयोग नहीं करूंगा, लेकिन यह बहुत अच्छा परिणाम नहीं होगा।'

सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी के आंकड़ों के अनुसार, कोरोना से उत्पन्न हुई स्थिति ने बेरोजगारी को बढ़ा दिया है, जो मई में 12 महीने के उच्च स्तर 11.9 फीसदी को छू गई है, यह अप्रैल में 7.97 फीसदी थी। निजी स्वामित्व वाली फर्म के अनुसार, ग्रामीण बेरोजगारी, जो आम तौर पर लगभग 6-7 फीसदी के आसपास रहती है, मई में दोहरे अंकों के स्तर पर पहुंच गई है।

पिछले दो वर्षों से आर्थिक सुस्ती चल ही रही थी, इसी बीच कोविड-19 ने आकर भारतीय

अर्थव्यवस्था की सुस्ती को और बढ़ा दिया। इस प्रकार देश में मॉग आधारित आर्थिक सुस्ती आ चुकी थी और अब इसने मॉग के साथ-साथ आपूर्ति आधारित सुस्ती का रुप धारण कर लिया है। वर्तमान की बात करें तो भारतीय अर्थव्यवस्था एक गहरे संकट की तरफ बढ़ रही है। प्रतिष्ठित अन्तर्राष्टीय संस्थाओं ने भीतर की आर्थिक वृद्धि दर के सन्दर्भ में जो ऑकलन जारी किये है, वे चिन्ताजनक हैं। सेन्टर फॉर मॉनिटरिंग इन्डियन इकोनॉमी द्वारा जारी ऑकड़ों के अनुसार भारत में लॉकडाउन की वजह से कुल 12 करोड़ नौकरियां चली गई है। कोरोना संकट से पहले भारत में कुल रोजगार आबादी की संख्या 40.4 करोड़ थी जो इस संकट के बाद घटकर 28.5 करोड़ हो चुकी है। हमें जान और जहान दोनों बचाना है। यदि जान बचाने के लिए लॉकडाउन करना है तो जहान बचाने के लिए लोगों की जीविका के साधनों को पुनः स्थापित करना है। अतः आर्थिक मोर्चे पर कुछ बड़े फैसले लेने होंगे। हेल्थ इमरजैंसीऔर इकोनॉमिक इमरजैंसी में तालमेल बैठाना होगा । भारतीय अर्थव्यवस्था में रिवर्स माइग्रेशन भी दिख रहा है। लोग शहरों से वापस गाँव की तरफ लौट रहे है। आने वाले समय में कोरोना वायरस की समस्या भारत में कितनी गंभीर होती है और उस पर कबतक पूर्णतः काबू पाया जा सकता है? इसका असर भी भारतीय अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा। कोरोना के कारण भारत की आर्थिक वृद्धि दर में गिरावट आयेगी, कोरोना ने भारत ही नहीं बल्कि दुनिया की अर्थव्यवस्था को खराब कर रखा है। वर्ल्ड बैंक के अनुमान के मुताबिक वित्तीय वर्ष 2019-20 में भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर घटकर मात्र 5 प्रतिशत रह जायेगी, तो वहीं वर्ष 2020-21 में तुलनात्मक आधार पर अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर में भारी गिरावट आयेगी, जो घटकर मात्र 2.8 प्रतिशत रह जायगी।

'लॉकडाउन के कारण, फैक्टी, ऑफिस, मॉल्स, व्यवसाय आदि बन्द हो जाते है, घरेलू मॉग और आपूर्ति प्रभावित होने के कारण आर्थिक वृद्धि दर प्रभावित होती है। अत: जोखिम बढ़ने से घरेलू निवेश के सुधार में देरी होती है जिसके कारण अर्थव्यवस्था मुश्किल दौर में पहुँच जाती है। इंटरनेशनल लेबर आर्गनाइजेशन ने कहा था कि कोरोना वायरस सिर्फ वैश्विक स्वास्थ्य संकट नही रहा बल्कि ये एक बड़ा. लेबर मार्केट और आर्थिक संकट भी बन गया है जो लोगों को बड़े पैमाने पर प्रभावित करेगा। विश्व बैंक ने भी आगाह किया है कि इस महामारी की वजह से भारत ही नहीं बल्कि समूचा दक्षिण एशिया गरीबी उन्मूलन से मिले फायदे को गँवा सकता है। अतः भारत को भी कोविड महामारी को फैलने से रोकने के 'लिए जल्द से जल्द प्रभावी कदम उठाना होगा, इसके साथ स्थानीय स्तर पर अस्थायी रोजगार सृजन कार्यकमों पर भी ध्यान देना होगा। सरकार द्वारा कोविड-19 के प्रसार को रोकने के लिए लॉकडाउन और सोशल डिस्टेंसिंग जैसे प्रयासों से औद्योगिक उत्पादन प्रभावित हुआ है। लॉकडाउन के कारण बेरोजगारी बढ़ी है, जिससे सार्वजानिक क्षेत्र में भारी कटौती हुई है, कच्चे माल की उपलब्धता, उत्पादन और तैयार उत्पादों के वितरण की श्रंखला प्रभावित हुई है, जिसे पुनः शुरु करने में लम्बा समय लग सकता है। उत्पादन स्थगित होने के कारण मजदूरों का पलायन बढ़ा है, इस दशा में पुनः कुशल मजदूरों की नियुक्ति करके पूरी क्षमता के साथ उत्पादन शुरु करना एक बड़ी चुनौती है। इसका अर्थव्यवस्था पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। खनन और उत्पादन जैसे अन्य क्षेत्रों में गिरावट का प्रभाव सेवा क्षेत्र की कम्पनियों पर भी पड़ा है। एविएशन सेक्टर में वेतन कम करने की खबर है, रेस्टोरेंट बन्द होने से लोग घूमने नहीं निकल रहे है। सामान की खरीदारी भी नहीं हो रही है। कम्पनियों को किराया, वेतन तथा अन्य खर्चों का भुगतान करना पड़ रहा है। घाटा झेल रही कम्पनियाँ अधिक समय तक यह भार सहन नहीं कर सकती। लॉकडाउन का सबसे अधिक असर अनौपचारिक क्षेत्र पर पड़ा है, अर्थव्यवस्था का 50 प्रतिशत जीडीपी अनौपचारिक क्षेत्र से ही आता है। यह क्षेत्र लॉकडाउन के दौरान काम नहीं कर सकता, और न कच्चा माल खरीद सकते न बनाया हुआ माल बाजार में बेच सकते, अतः उनकी कमाई बन्द हो जायेगी। अनौपचारिक क्षेत्र में फेरीवाले, विकेता, कलाकार, लघुउद्योग और सीमापार व्यापार शामिल है। लॉकडाउन के दौर में सबसे ज्यादा असर एविएशन, पर्यटन, होटल आदि क्षेत्रों पर पड़ा है। कोरोना के कारण भारत सरकार द्वारा विदेशी निवेश के जरिये अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने की जो कोशिश थी, उसे भी धक्का लगेगा।

रिजर्व बैंक ने सभी बैंकों से सभी कर्जों पर तीन माह तक कर्जों का भुगतान (किस्तों को) टालने को कहा है। साथ ही ब्याज दरों में कमी की है। हमारे देश में छोटे-छोटे कारखानों और लघु उद्योगों की संख्या बहुत ज्यादा है। कोरोना से उनकी कमाई रुक जायेगी, आर्थिक तंगी में आकर कई लोग महाजनों से ऊँचे ब्याज दर पर कर्ज ले लेते है और कर्जजाल में फैंस जाते है। ऑटोमाबाइल सेक्टर, रियल स्टेट, लघुउद्योग आदि असंगठित क्षेत्रों में सुस्ती छायी है। बैंक एन.पी.ए. की समस्या से निपट रहे है। सरकार ने निवेश के जरिए नियमों में राहत और आर्थिक मदद देकर अर्थव्यवस्था को राहत देने की कोशिश की। इस तरह से कोविड काल ने देश की अर्थव्यवस्था की जड़ों को खोखला किया है। अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्था आई.एम.एफ ने एक टास्क फोर्स का गठन किया है। इस टास्क फोर्स का उद्देश्य है कि बिगड़ती हुई अर्थव्यवस्था को कैसे पटरी पर लाया जाय? इस टास्क फोर्स में आर.बी.आई. के पूर्व गवर्नर रघुराम राजन भी है। इसी तरह भारत को भी चाहिए कि प्रतिभाशाली अर्थशास्त्रियों की एक कमेटी का गठन किया जाय, जिसमें प्रोफेशनल हो और वे भारतीय चुनौतियों के अनुसार देश की अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए चरणबद्ध तरीके से नीतिगत समाधान सरकार के सामने रखें। यद्यपि कोविड-19 के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था का परिदृश्य अच्छा नहीं दिख रहा है, पर वह दिन दूर नहीं जब हम कर्मठ भारतीय श्रम और संघर्ष से अर्थव्यवस्था को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में सक्षम होंगे।

REFERENCES

1. *Perappadan, Bindu Shajan (30 January 2020). "India's first coronavirus infection confirmed in Kerala". The Hindu. ISSN 0971-751X.*

2. *"India most infected by Covid-19 among Asian countries, leaves Turkey behind". Hindustan Times. 29 May 2020.*

3. *Bhattacharya, Amit (24 May 2021). "India's Covid toll tops 3 lakh, 50,000 deaths in 12 days". The Times of India.*

4. *"India's COVID crisis 'beyond heartbreaking': WHO". www.aljazeera.com. Retrieved 26 April 2021.*

5. *Andrews, MA; Areekal, Binu; Rajesh, KR; Krishnan, Jijith; Suryakala, R; Krishnan, Biju; Muraly, CP; Santhosh, PV (May 2020). "First confirmed case of COVID-19 infection in India: A case report". Indian Journal of Medical Research. 151 (5): 490–492. doi:10.4103/ijmr.IJMR_2131_20.*

6. *Narasimhan, T. E. (30 January 2020). "India's first coronavirus case: Kerala student in Wuhan tested positive". Business Standard India. Archived from the original on 11 March 2020.*

7. *"Infections over 1 lakh, five cities with half the cases: India's coronavirus story so far". The Week.*

8. *Shivani Kumar (10 June 2020). "Covid-19: Number of recoveries exceed active cases for first time". Hindustan Times. New Delhi*